क्विक रीविज़न मॉड्यूल (यू.पी.एस.सी. प्रीलिम्स 2024) भूगोल

भूगोल

स्थान और भू—आकृति विज्ञान

भारत: भौतिक संरचना और भू—आकृति विज्ञान

- कर्क रेखा (23° 30′N) देश को लगभग दो बराबर भागों में विभाजित करती है। यह मिजोरम, त्रिपुरा, पश्चिम बंगाल, झारखंड, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, राजस्थान और गुजरात से होकर गुजरती है।
- भारत के पड़ोसियों में पाकिस्तान, अफगानिस्तान, चीन, नेपाल, भूटान, म्यांमार और बांग्लादेश शामिल हैं।
- मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, हरियाणा को छोड़कर, सभी राज्य अंतर्राष्ट्रीय या समुद्री सीमा साझा करते हैं।
- भारत विश्व का सातवां सबसे बड़ा देश है।
- भौगोलिक क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान सबसे बड़ा राज्य है, जबकि गोवा सबसे छोटा राज्य है।
- अंडमान और निकोबार द्वीप समूह भारत संघ की दक्षिणी सीमा बनाते हैं।
- यह पूरी तरह से उत्तरी गोलार्ध में स्थित है। देश का दक्षिणी भाग उष्णकटिबंधीय क्षेत्र के भीतर स्थित है और उत्तरी भाग उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्र या उष्ण शीतोष्ण कटिबंध क्षेत्र में स्थित है।

भारत की भौतिक संरचना

भारत के भूवैज्ञानिक क्षेत्रों को मोटे तौर पर तीन भागों में विभाजित किया गया है–
(i) प्रायद्वीपीय खंड (ii) हिमालय और (iii) सिंधु–गंगा–ब्रह्मपुत्र मैदान

प्रायद्वीपीय खंड

1) विश्व की सबसे पुरानी चट्टानें प्री कैम्ब्रियन काल की और सबसे नवीन चट्टानें क्वार्टनरी काल की हैं।

2) यह खंड विभिन्न ऊर्ध्वाधर गतिविधियों और ब्लॉक भ्रंशन के अधीन है। नर्मदा की भ्रंश घाटियाँ, अरावली पहाड़ियाँ जैसे अवशेष और अवशिष्ट पर्वत, पूर्वी भारत में मालदा भ्रंश जैसे ब्लॉक भ्रंश इसके उदाहरण हैं।

3) इसमें सभी प्रकार की चट्टानें शामिल हैं – आग्नेय, कायांतरित और अवसादी चट्टानें।

4) प्रायद्वीपीय भारत के कोयला क्षेत्र गोंडवाना काल के दौरान विकसित हुए थे।

5) दक्कन की काली मिट्टी क्रेटेशियस काल के दौरान भारी मात्रा में लावा के बाहर निकलने के कारण है।

हिमालय

1) हिमालय भूगर्भीय रूप से युवा, कमजोर और लचीले व संरचनात्मक रूप से वलित पर्वत हैं।

2) लगभग 65–30 मिलियन वर्ष पहले, भारतीय प्लेट यूरेशियन प्लेट के बहुत करीब आ गई और उसके नीचे दबने लगी, जिससे पार्श्व संपीड़न हुआ और परिणामस्वरूप टेथिस सागर सिमटकर हिमालय की तीन समानांतर श्रेणियों में बदल गया।

3) हिमालय चार स्थलमंडल विवर्तनिक पर्वत श्रृंखलाओं से मिलकर निर्मित होता है, अर्थात् (i) ट्रांस–हिमालय; (ii) ग्रेटर हिमालय; (iii) लघु हिमालय; और (iv) शिवालिक।

सिंधु–गंगा–ब्रह्मपुत्र मैदान

1) यह उत्तर में हिमालय और दक्षिण में प्रायद्वीपीय पठार से निकलने वाली नदियों के जलोढ़ निक्षेपों द्वारा निर्मित एक क्रमिक मैदान है।

हिमालय का अक्षसंघीय मोड़ (Syntaxial Bend)

1) हिमालय की संरचनाएँ और प्रवृत्तियाँ सीमा के दोनों सिरों पर तेजी से परवर्तित होती हैं, जो "अक्षसंघीय" नामक मोड़ को परिभाषित करती हैं।

2) हिमालय का **पश्चिमी अक्षसंघीय मोड़ नंगा पर्वत** के निकट है जहां सिंधु नदी गहरी खाई को काटते हुए निकलती है। अरुणाचल प्रदेश में भी एक ऐसा ही हेयरपिन टर्न (यू के आकार का मोड़) है जहां ब्रह्मपुत्र नदी को पार करने के बाद पहाड़ पूर्व से दक्षिणी दिशा में एक तीव्र मोड़ लेते हैं।

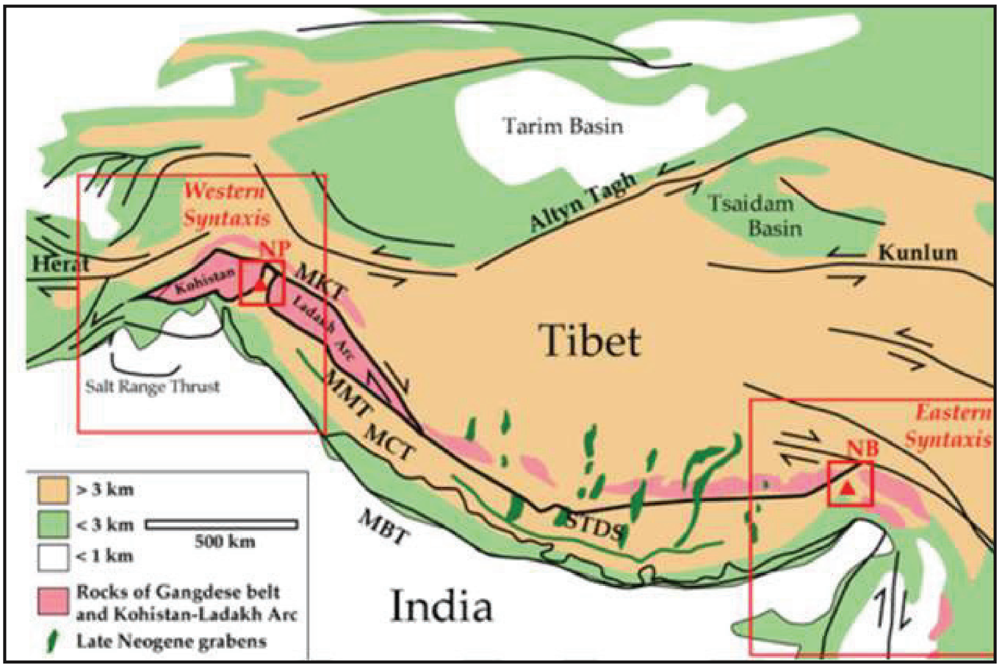

Fig: Himalaya's syntaxes at NP (Nanga Parbat) and NB (Namcha Barwa)

भू–आकृति विज्ञान (PHYSIOGRAPHY)

भारत को छह भू–आकृति भागों में विभाजित किया जा सकता है:

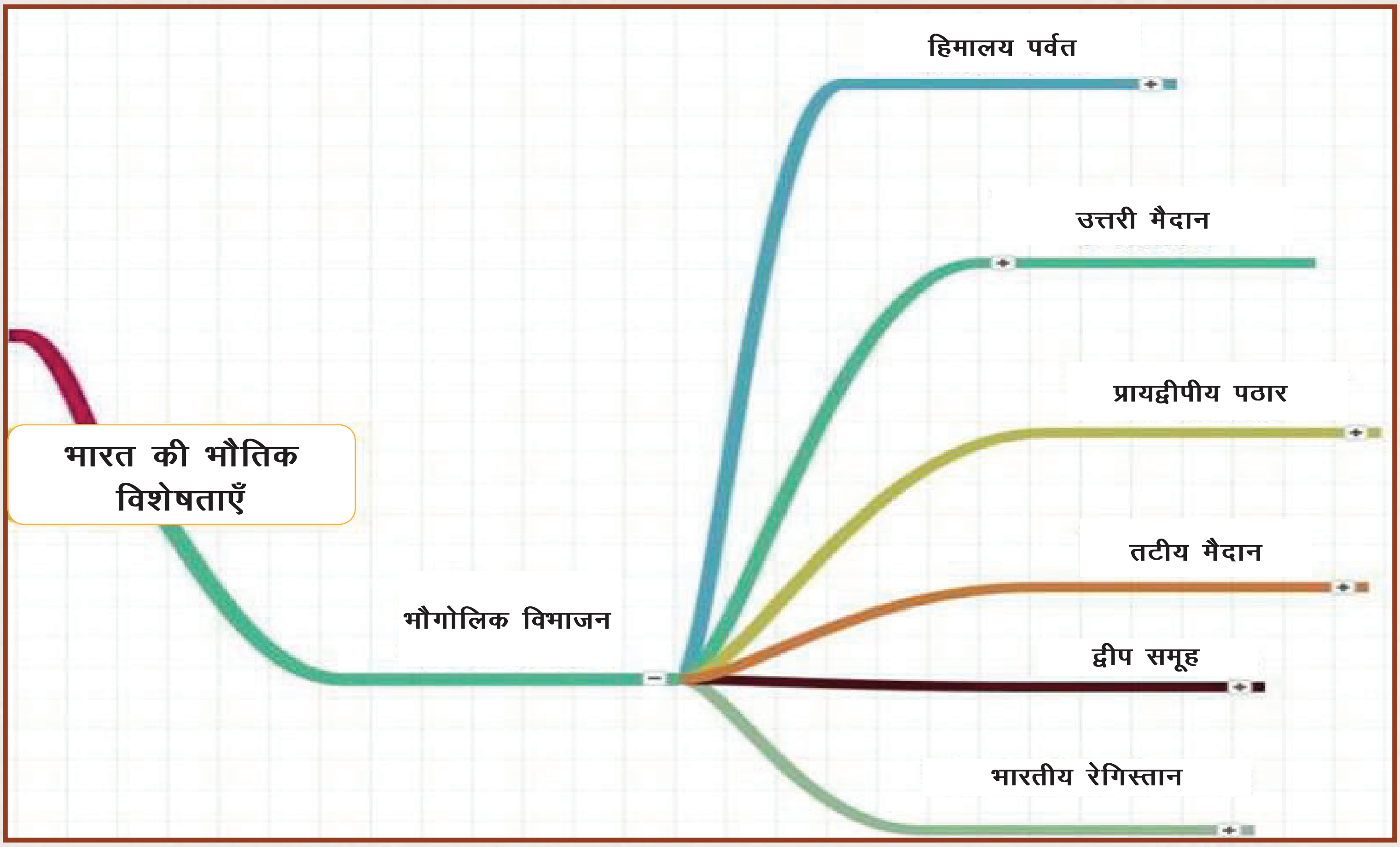

1) हिमालय पर्वत

पश्चिमी हिस्से की तुलना में पूर्वी हिस्से में तुंगता संबंधी भिन्नताएँ अधिक हैं।

सामान्य अभिविन्यास

1. भारत के उत्तर–पश्चिमी भाग में **उत्तर–पश्चिम से दक्षिण–पूर्व** दिशा की ओर।
2. दार्जिलिंग और सिक्किम क्षेत्रों में **पूर्व–पश्चिम दिशा** की ओर।
3. नागालैंड, मणिपुर और मिजोरम में **उत्तर–दक्षिण दिशा** की ओर।

हिमालय के अनुदैर्ध्य विभाजन में शामिल हैं – ट्रांस–हिमालय, वृहद हिमालय, लघु हिमालय और शिवालिक।

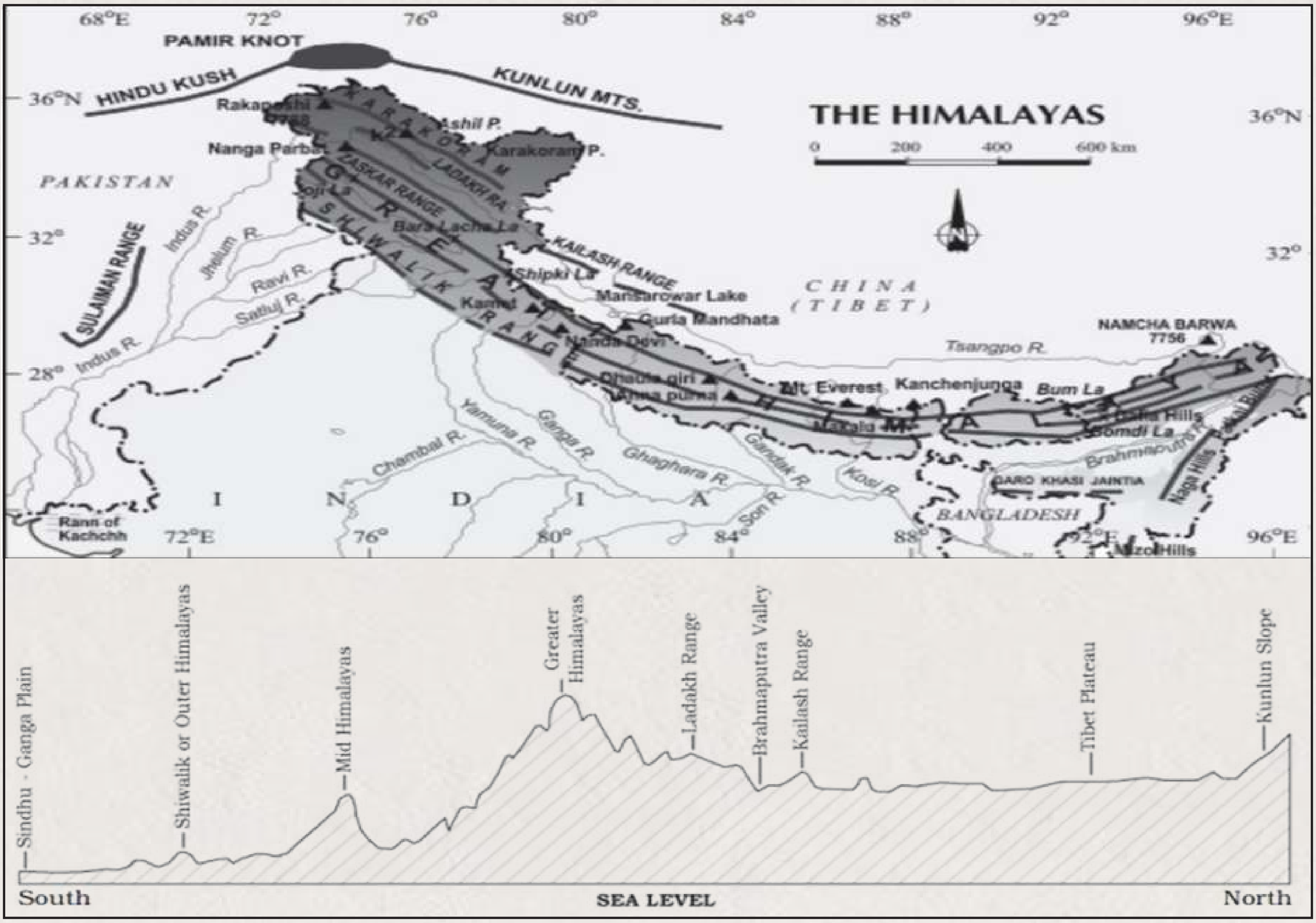

ट्रांस हिमालय

- ये लगभग 40 कि.मी. चौड़े हैं और इनमें टेथिस सागर के अवसाद हैं, जिसके नीचे **'टर्शियरी ग्रेनाइट'** पाए जाते हैं।
- भारत में ट्रांस–हिमालय काराकोरम, लद्दाख और जास्कर पर्वत श्रृंखलाएँ हैं।

बृहत हिमालय

- ये दीवार की भांति अचानक ऊपर उठे हुए प्रतीत होते हैं। ये 25 कि.मी. चौड़े हैं जिनकी औसत ऊँचाई 6,100 मीटर से अधिक है।
- हिमालय की लगभग सभी ऊँची चोटियाँ, जैसे– माउंट एवरेस्ट, कंचनजंगा, नंगा–पर्वत इसी क्षेत्र में स्थित हैं।
- इनके बीच **पूर्ववर्ती नदियों** द्वारा मुख्य रूप से बहुत कम अंतराल प्रदान किया गया है, अन्यथा यह हिमालय प्रणाली में **सबसे सतत् श्रृंखला होती।**

लघु/मध्य हिमालय

- 1,300 – 4,600 मीटर की औसत ऊंचाई के साथ इनकी चौड़ाई लगभग 80 कि.मी. है।
- भारी वर्षा, वनों की कटाई और शहरीकरण के कारण इनका **व्यापक क्षरण** हुआ है।

शिवालिक

- ये 10–50 कि.मी. की चौड़ाई में विस्तारित हैं तथा इनकी ऊंचाई 900 मीटर से लेकर 1,100 मीटर तक है।
- ये श्रृंखला उत्तर में स्थित मुख्य हिमालय पर्वतमाला से नदियों द्वारा लायी गयी **असंपीडित अवसादों** से निर्मित है।
- गॉर्ज, V–आकार घाटियाँ, झिप्रिकाएँ (Rapids) व जल प्रपात इत्यादि भू–आकृतियाँ हिमालय के युवा चरण के संकेत हैं।

हिमालय का विभाजन: उच्चावच, पर्वत श्रेणियों के संरेखण और भू–आकृतियों के आधार पर

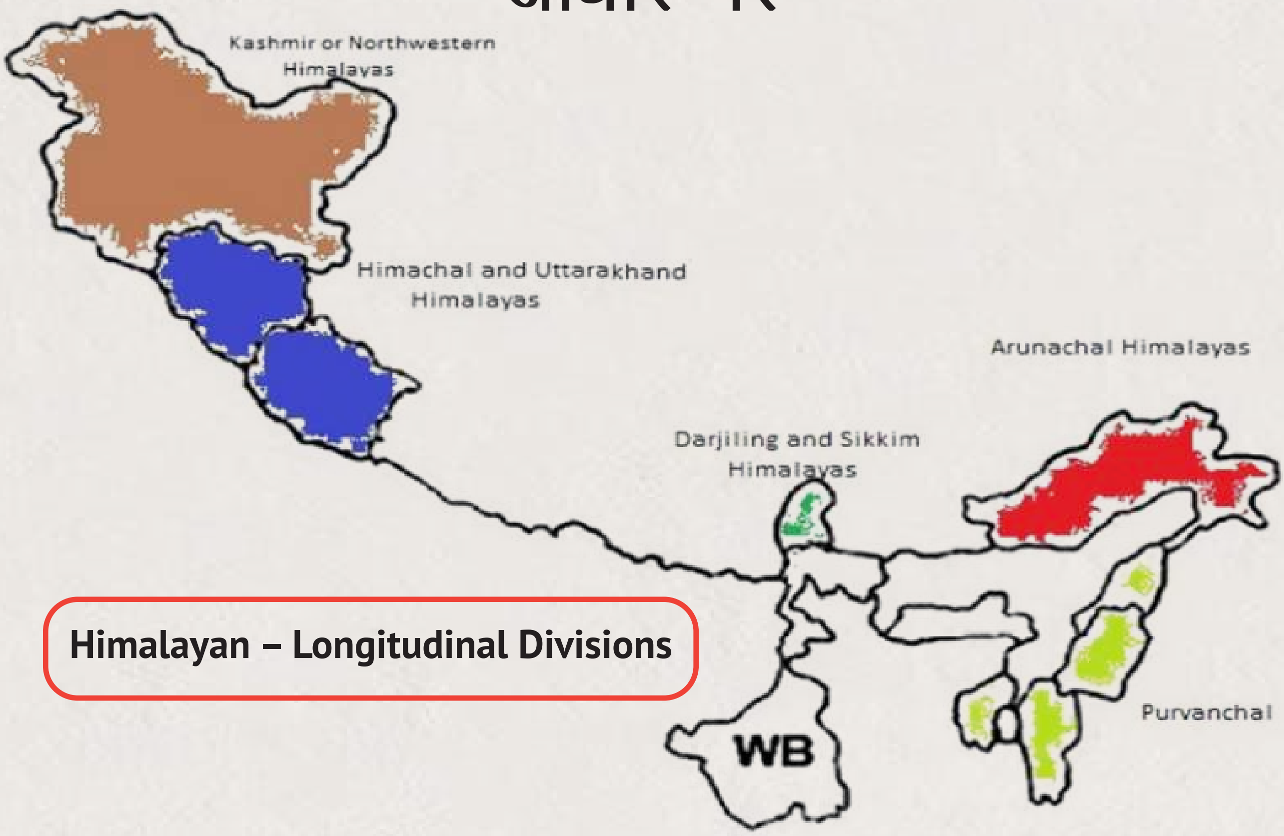

कश्मीर या उत्तर पश्चिमी हिमालय

- **सिंधु और रावी** नदियों के बीच स्थित है।
- भारत में **सबसे अधिक हिमनद** हिमालय के इसी भाग में हैं, जैसे– बाल्टोरो, सियाचिन हिमनद।
- काराकोरम, लद्दाख, ज़ास्कर और पीर पंजाल जैसी श्रेणियों की एक श्रृंखला शामिल है।
- **करेवा गठन:** हिमनद चिकनी मिट्टी और अन्य पदार्थों का हिमोढ़ (Moraine) पर मोटी परत के रूप में जमाव है। यह **केसर की खेती** के लिए उपयोगी होता है।
- इस क्षेत्र के सबसे दक्षिणी भाग में अनुदैर्ध्य घाटियां पाई जाती हैं जिन्हें 'दून' कहा जाता है, जैसे– जम्मू दून और पठानकोट दून आदि।
- महत्वपूर्ण भौगोलिक विशेषताएँ = डल, वुलर, पैंगोंग सो और सो मोरीरी झीलें, बृहत हिमालय पर ज़ोजीला दर्रा, पीर पंजाल में बानिहाल दर्रा, जास्कर पर फोटुला दर्रा और लद्दाख श्रेणी में खार्दुंगला दर्रा।

हिमाचल और उत्तराखंड हिमालय

- यह पश्चिम में **रावी** और पूर्व में **काली नदी** के बीच स्थित है।
- हिमालय की तीनों मुख्य पर्वत श्रृंखलाएँ, बृहत हिमालय, लघु हिमालय (जिन्हें हिमाचल में धौलाधर और उत्तराखंड में नागटिब्बा कहा जाता है) और शिवालिक श्रेणी– हिमालय के इस खंड में स्थित हैं।
- दो महत्वपूर्ण स्थलाकृतियां 'शिवालिक' और 'दून' हैं (कुछ महत्वपूर्ण दून– चंडीगढ़ कालका दून, नालागढ़ दून, देहरादून आदि हैं)।
- बृहत हिमालय की घाटियों में खानाबदोश जनजाति **'भोटिया'** निवास करती हैं, जो ग्रीष्म ऋतु में **'बुगयाल'** (ऊंचाई पर स्थित घास के मैदान) में चले जाते हैं और शरद ऋतु में घाटियों में लौट आते हैं।
- महत्वपूर्ण भौगोलिक विशेषताएं: गंगोत्री, मिलम और पिंडार जैसे ग्लेशियर; फूलों की घाटी; गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ, बद्रीनाथ और हेमकुंड साहिब जैसे तीर्थ स्थान; पांच प्रसिद्ध प्रयाग अर्थात् विष्णुप्रयाग, नंदप्रयाग, कर्णप्रयाग, रुद्रप्रयाग और देवप्रयाग; धर्मशाला, मसूरी, शिमला जैसे हिल स्टेशन।

दार्जिलिंग और सिक्किम हिमालय

- यहां शिवालिकों के स्थान पर दुआर स्थलाकृतियाँ पाई जाती हैं जिनका उपयोग चाय बागानों को लगाने के लिए किया जाता है।
- इस क्षेत्र के ऊंचे इलाकों में लेप्चा जनजातियां निवास करती हैं।
- मध्यम ढाल, जीवाश्मयुक्त मिट्टी का आवरण, पूरे साल वर्षा का होना और हल्की सर्दियाँ चाय बागानों के लिए अनुकूल हैं।
- दर्रे: नाथू–ला और जेलेप–ला।

अरुणाचल हिमालय

- इस भाग में असम के मैदानों से हिमालय बहुत तेजी से ऊपर उठता है।
- इस क्षेत्र की मुख्य पर्वत चोटियों में काँगतु और नामचा बरवा शामिल हैं।
- कुछ प्रमुख जनजातियां जैसे मोनपा, डफला, अबोर, मिश्मी, निशी और नागा झूम खेती (स्थानांतरण खेती) का अभ्यास करते हैं।
- महत्वपूर्ण नदियाँ: कामेंग, सुबनसिरी, दिहांग, दिबांग और लोहित।

पूर्वी पहाड़ियाँ और पहाड़ या पूर्वांचल

- उत्तर में, उन्हें पटकाई बूम (अरुणाचल प्रदेश), नागा पहाड़ियों (नागालैंड), मणिपुर पहाड़ियों (मणिपुर) और दक्षिण में मिज़ो या लुशाई पहाड़ियों (मिजोरम) के रूप में जाना जाता है।
- मिजोरम जिसे 'मोलासिस बेसिन' के नाम से भी जाना जाता है, मृदुल और असंगठित चट्टानों से बना है।
- महत्वपूर्ण नदी: बराक।

2) उत्तरी मैदान

भू–जलवायु और स्थलाकृतिक विशेषताओं के आधार पर, भारत के उत्तरी मैदानों को निम्नलिखित चार क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है, अर्थात् (i) राजस्थान के मैदान (ii) पंजाब–हरियाणा के मैदान (iii) गंगा के मैदान और (iv) ब्रह्मपुत्र के मैदान।

राजस्थान का मैदानी क्षेत्र

- इन मैदानों का बड़ा भाग रेत के टीलों और बरखानों से आच्छादित मरुस्थल है।
- इंदिरा गांधी नहर के कारण उत्तर–पश्चिमी राजस्थान में सघन कृषि हो पाई है।

पंजाब हरियाणा के मैदान

- दो नदियों के बीच के मैदान को दोआब कहते हैं, जैसे– ब्यास और सतलुज के बीच बिष्ट दोआब।

गंगा का मैदान

- ऊपरी गंगा के मैदान में गंगा–यमुना दोआब शामिल है। यह भारत के सबसे अधिक उत्पादक मैदानों में से एक है जिसमें हरित क्रांति अत्यधिक सफल हुई थी। यहाँ उगाई जाने वाली मुख्य फसलें गन्ना, गेहूं, चावल, मक्का, सरसों, सब्जियाँ आदि हैं।
- मध्य गंगा का मैदान– इसमें लगभग कंकड़ रहित मोटे जलोढ़ निक्षेप मौजूद हैं। कम ढाल वाला मैदान होने के कारण, इस क्षेत्र में नदियाँ अक्सर अपना मार्ग बदलती हैं।
- गंगा का निचला मैदान– यहाँ से तिस्ता, संकोश, महानंदा, दामोदर, सुवर्णरेखा नदियाँ बहती हैं। इन मैदानों ने भारतीय प्लेट की गतिविधि के दौरान बने भ्रंशों को अवसादों से भर दिया है।

ब्रह्मपुत्र का मैदान

- माजुली का क्षेत्रफल लगभग 930 वर्ग कि.मी. है। यह भारत का सबसे बड़ा नदी द्वीप और विश्व का दूसरा सबसे बड़ा नदी द्वीप है।
- हिमालय से निकलने वाली सहायक नदियाँ जलोढ़ पंखों की एक श्रृंखला बनाती हैं। यहाँ की उपजाऊ घाटी चावल और जूट उगाने के लिए अनुकूल है। यह अपने चाय और दो राष्ट्रीय उद्यानों– काजीरंगा और मानस के लिए भी प्रसिद्ध है।

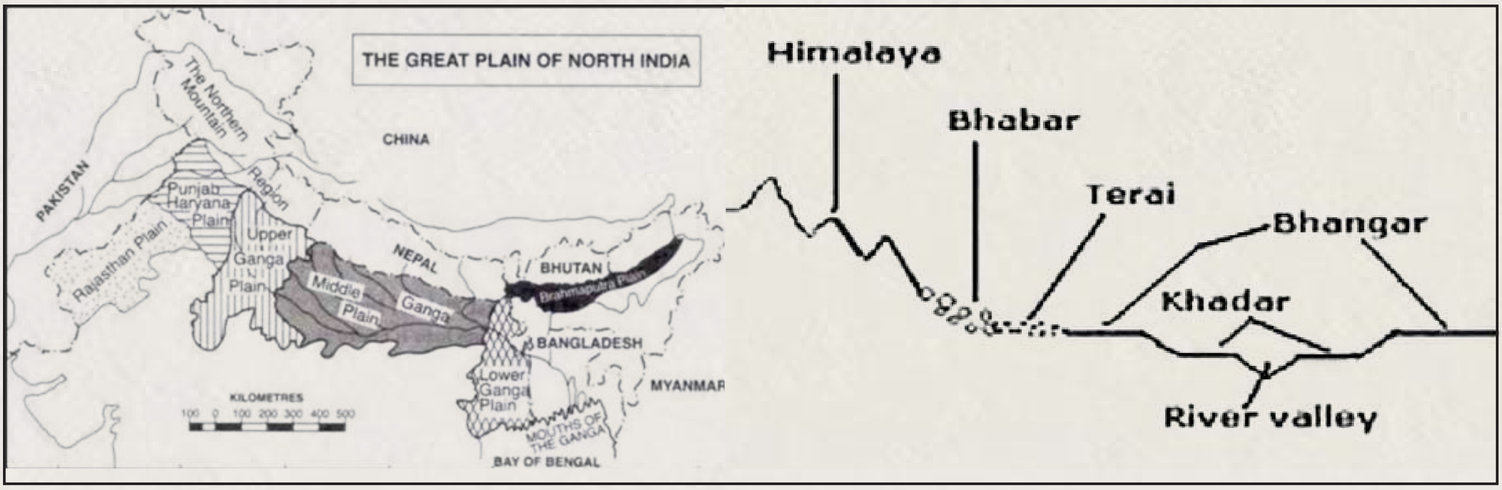

भारत के उत्तरी मैदानों के विभिन्न खंड

उत्तर से दक्षिण तक, उत्तरी मैदानों को तीन प्रमुख क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है: भाबर, तराई और जलोढ़ मैदान। जलोढ़ मैदानों को आगे खादर और बांगर में विभाजित किया जा सकता है।

भाबर मैदान

- भाबर 8 से 10 किलोमीटर चौड़ाई की एक पतली पट्टी है जो शिवालिक गिरिपाद के सामानांतर फैली हुई है।
- हिमालय से निकलती नदियां यहां पर भारी जल–भार, जैसे– बड़े शैल और गोलाश्म जमा कर देती हैं और कभी–कभी स्वयं इसी में लुप्त हो जाती हैं।
- निक्षेपों का यह भार धाराओं के लिए बहुत भारी हो जाता है और शिवालिक गिरिपाद में जलोढ़ पंख नामक एक व्यापक निम्न से उच्च शंकु के आकार के निक्षेप के रूप में जमा होकर फैल जाता है।
- यह कृषि के लिए उपयुक्त नहीं है। इस क्षेत्र में केवल बड़ी जड़ों वाले बड़े वृक्ष ही पनपते हैं। यहां के निवासी बड़े पैमाने पर मवेशी रखने वाले गुर्जर हैं।

तराई क्षेत्र

- अधिकांश धाराएँ और नदियाँ किसी भी निश्चित वाहिकाओं के बिना यहाँ पुनः प्रकट होती हैं एवं 'नम' तथा 'दलदली क्षेत्र' का निर्माण करती हैं, जिसे 'तराई' कहा जाता है।
- यह क्षेत्र प्राकृतिक वनस्पति से ढ़का रहता है और विभिन्न प्रकार के वन्य प्राणियों का आवास है।
- यहाँ गन्ना, चावल, गेहूं, मक्का जैसी कृषि फसलें उगाई जाती हैं।

बांगर मैदान

- बांगर पुराने जलोढ़ द्वारा निर्मित उच्च भूमि जलोढ़ पथ का प्रतिनिधित्व करता है।
- उत्तरी मैदानों का सबसे बड़ा भाग इसी पुराने जलोढ़ से बना है।
- यहाँ की मृदा गहरे रंग की, ह्यूमस से भरपूर और उत्पादक होती है जिसमें चूनेदार निक्षेप या कंकड़–पत्थर की सांद्रता और गांठें होती हैं।

खादर मैदान

- नदियों के किनारे नए जलोढ़ निक्षेपों को खादर भूमि के रूप में जाना जाता है।
- ये बाढ़ वाले मैदानों के नये तथा युवा निक्षेप होते हैं।
- खादर की अधिकांश भूमि गहन कृषि के लिए आदर्श होती है। यहाँ मुख्य रूप से गन्ना, चावल, गेहूं, मक्का, तिलहन की पैदावार होती है।

3) प्रायद्वीपीय पठार

प्रायद्वीपीय पठार एक मेज की आकृति वाला स्थल है जो पुराने क्रिस्टलीय, आग्नेय तथा रूपांतरित शैलों से निर्मित है। यह भारत के प्राचीनतम और स्थिर भू–भागों में से एक है।

प्रायद्वीपीय पठार की विशिष्ट विशेषताओं में से एक काली मिट्टी का क्षेत्र है, जिसे **'दक्कन ट्रैप'** के रूप में जाना जाता है।

प्रायद्वीपीय भारत, हजारीबाग पठार, पलामू पठार, रांची पठार, मालवा पठार, कोयंबटूर पठार और कर्नाटक पठार जैसे पठारों से मिलकर बना है।

उत्तर–पश्चिम में दिल्ली रिज, (अरावली का विस्तार), पूर्व में राजमहल पहाड़ियां, पश्चिम में गीर पहाड़ियां और दक्षिण में इलायची (कार्डामम) पहाड़ियाँ प्रायद्वीपीय पठार की सीमाएँ निर्धारित करती हैं।

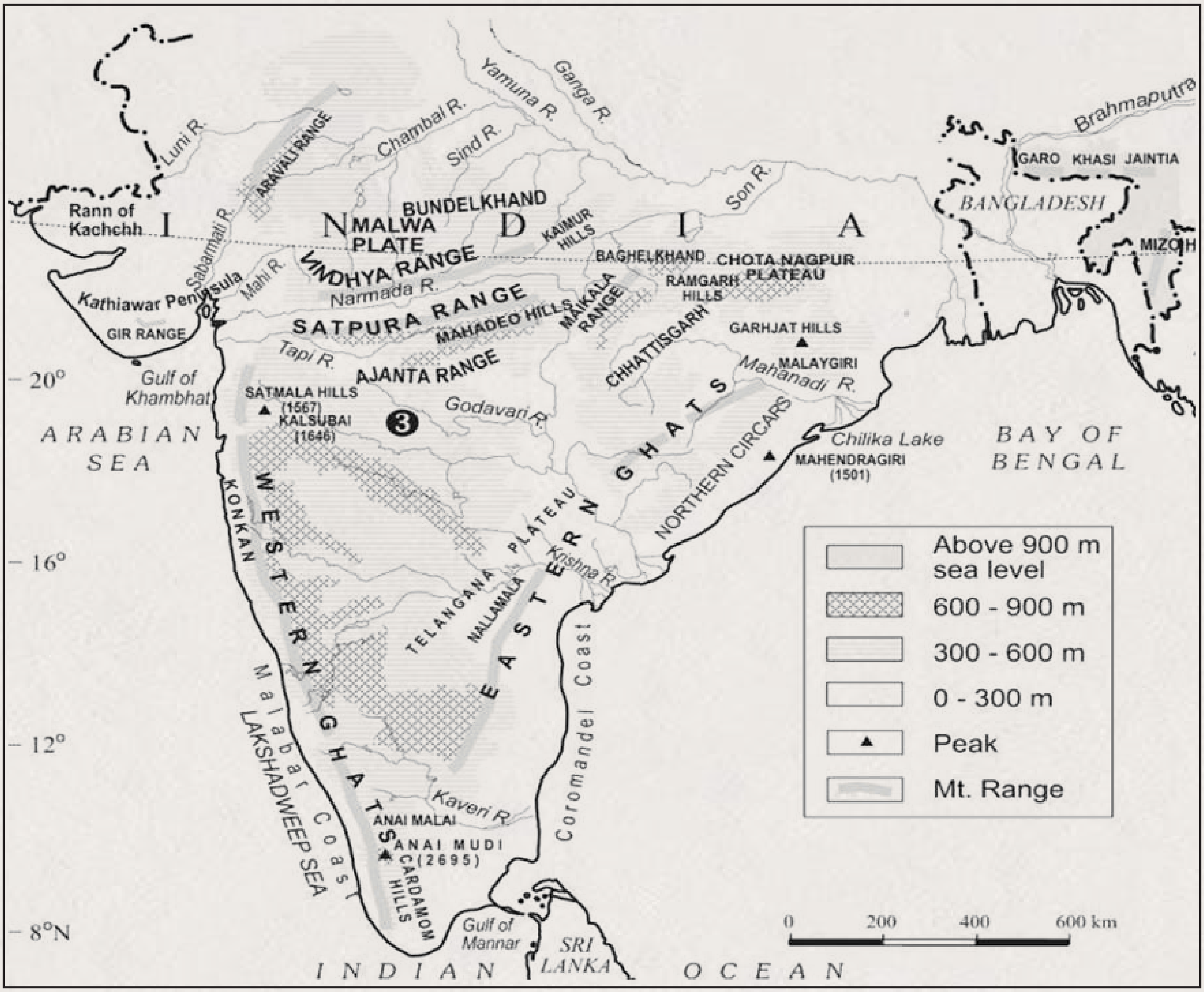

प्रायद्वीपीय भारतः उच्चावच

दक्कन का पठार	● इस पठार का आकार **त्रिभुजाकार** है और यह नर्मदा नदी के दक्षिण में स्थित है। ● इसके पश्चिम में पश्चिमी घाट, पूर्व में पूर्वी घाट और उत्तर में सतपुड़ा, मैकाल व महादेव पहाड़ियाँ हैं। ● **पश्चिमी घाट** ➢ इसे स्थानीय रूप से विभिन्न नामों से जाना जाता है जैसे कि महाराष्ट्र में सह्याद्री, कर्नाटक और तमिलनाडु में नीलगिरी और केरल में अन्नामलाई और इलायची पहाड़ियाँ। ➢ ये **ब्लॉक पर्वत हैं** जो अरब सागर में एक हिस्से के नीचे की ओर धंसने के कारण बने हैं। ➢ पूर्वी घाट की तुलना में पश्चिमी घाट ऊंचे और अविरत हैं। 'अनाईमुडी' (2,695 मीटर), प्रायद्वीपीय पठार की सबसे ऊंची चोटी है जो पश्चिमी घाट की अन्नामलाई पहाड़ियों पर स्थित है। दूसरी सबसे ऊँची चोटी डोड्डाबेट्टा (2,637 मीटर) है। यह नीलगिरि पहाड़ियों में हैं। ● पूर्वी घाट ➢ ये असतत् व अनियमित हैं और महानदी, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी जैसी नदियों द्वारा अपरदित है, जो बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं। ➢ महेंद्रगिरि (1,501 मीटर) पूर्वी घाट की सबसे ऊंची चोटी है। पूर्वी और पश्चिमी घाट नीलगिरी पहाड़ियों में आपस में मिलते हैं।
मध्य उच्च भूभाग	● मालवा का पठार मध्य उच्च भूमि का प्रमुख भाग है। ● मध्य उच्च भू–भाग का हिस्सा जो मालवा पठार के पूर्व में फैला हुआ है, बुंदेलखंड के रूप में जाना जाता है। इसके बाद बघेलखंड व विशाल खनिज भंडार युक्त प्रसिद्ध छोटा नागपुर पठार आता है। ● प्रायद्वीपीय पठार का विस्तार पश्चिम में जैसलमेर तक देखा जा सकता है, जहाँ यह अनुदैर्ध्य रेत की लकीरों और अर्धचंद्राकार रेत के टीलों से ढका हुआ है, जिन्हें बरखान कहा जाता है।
उत्तर पूर्वी पठार	● यह पूर्वोत्तर में मुख्य प्रायद्वीपीय पठार का ही विस्तार है, जिसे स्थानीय रूप से मेघालय और कार्बी एंगलॉन्ग पठार के रूप में जाना जाता है। ● यह छोटा नागपुर पठार से **मालदा भ्रंश** द्वारा अलग हुआ है। ● इसमें आवासित जनजातियों के नाम के आधार मेघालय के पठार को तीन भागों में विभाजित किया गया है: (i) गारो पहाड़ियाँ; (ii) खासी पहाड़ियाँ (iii) जयंतिया पहाड़ियाँ। असम की कार्बी एंगलॉन्ग पहाड़ियाँ भी इसी का विस्तार है। इस पठार की सबसे ऊँची चोटी शिलांग है। ● मेघालय का पठार कोयला, लौह अयस्क, सिलीमेनाइट, चूना पत्थर और यूरेनियम जैसे खनिज संसाधनों से भी समृद्ध है।

4) भारतीय रेगिस्तान

यहाँ पर वार्षिक वर्षा 150 मिलीमीटर से कम होती है, जिसके परिणामस्वरूप यह एक शुष्क और वनस्पति रहित क्षेत्र है। कम वर्षा और उच्च वाष्पीकरण इसे जल–न्यून क्षेत्र बनाता है।

यह एक उबड़–खाबड़ भूतल है, जिस पर बहुत से अनुदैर्ध्य रेतीले टीले और बरखान पाए जाते हैं। यहाँ की प्रमुख स्थलाकृतियाँ स्थानांतरी रेतीले टीले, छत्रक चट्टानें और मरुउद्यान हैं।

लूनी इस क्षेत्र की एकमात्र महत्वपूर्ण नदी है। मरुस्थल को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है: उत्तरी भाग की ढलान सिंध की ओर है और दक्षिणी भाग की ढलान रण ऑफ कच्छ की ओर है।

5) तटीय मैदान

प्रायद्वीपीय पठार पश्चिम में अरब सागर और पूर्व में बंगाल की खाड़ी के साथ–साथ संकीर्ण तटीय पट्टियों का विस्तार है।

पश्चिमी तटीय मैदान	पूर्वी तटीय मैदान
ये मैदान **जलमग्न तटीय मैदान** का उदाहरण हैं।	पूर्वी तटीय मैदान **चौड़े और उभरे हुए तट** का उदाहरण हैं।
यह जलमग्न होने के कारण एक संकीर्ण पट्टी है, जो पत्तनों एवं बंदरगाहों के विकास के लिए प्राकृतिक परिस्थितियाँ प्रदान करता है।	उभरा और समतल तट होने के कारण यहाँ पत्तन और बंदरगाहों की संख्या कम है।
ये मैदान **मध्य में संकीर्ण हैं,** परंतु उत्तर और दक्षिण में चौड़े हो जाते हैं।	इन मैदानों का निर्माण जलोढ़ भराव से हुआ है। इन्हें उत्तरी भाग में 'उत्तरी सरकार' कहा जाता है, जबकि दक्षिणी भाग 'कोरोमंडल तट' के रूप में जाना जाता है।
पश्चिम तटीय मैदान में बहने वाली नदियाँ कोई डेल्टा नहीं बनाती हैं।	बड़ी नदियाँ पूर्वी तट पर विशाल डेल्टा का निर्माण करती हैं।

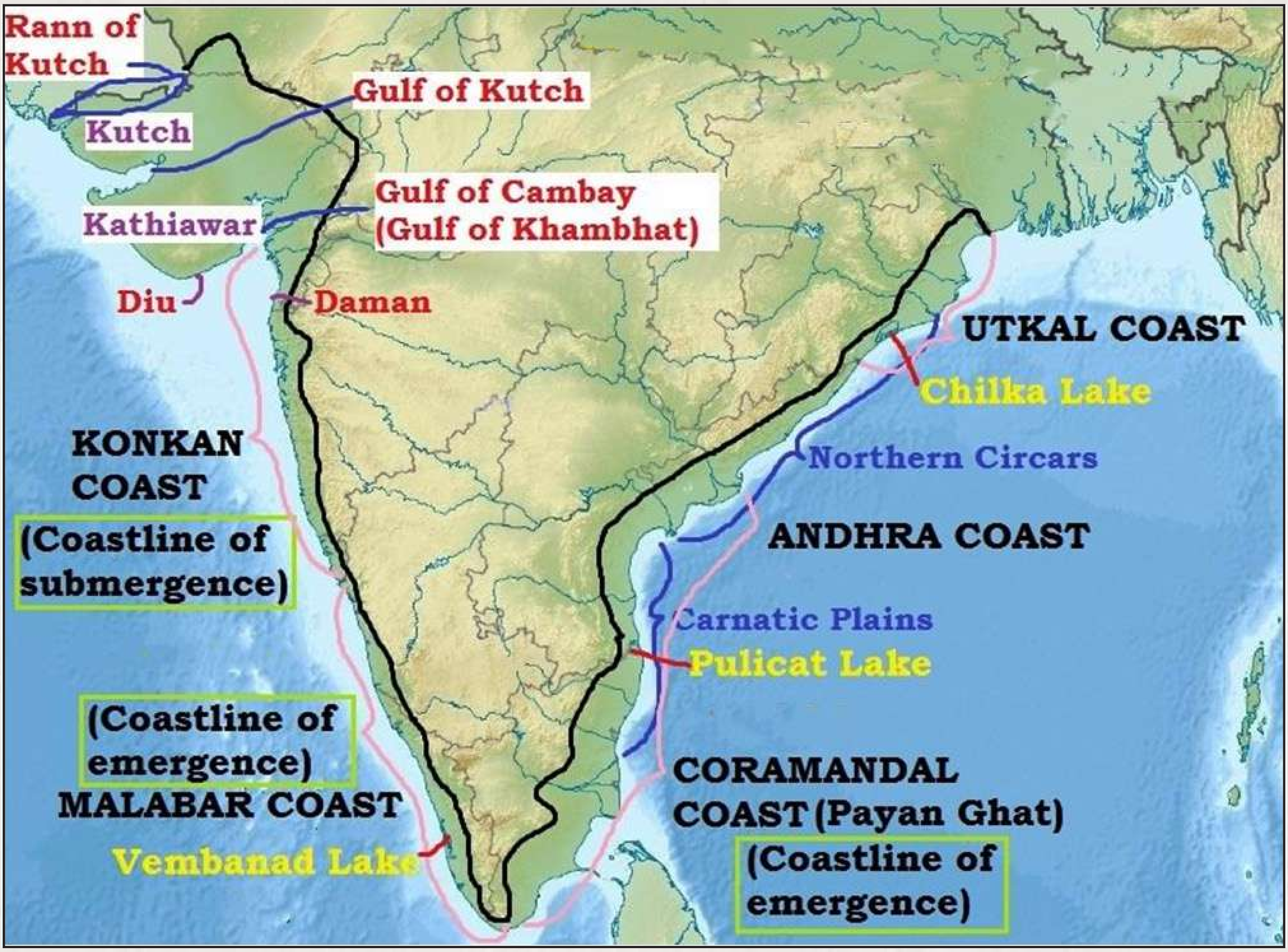

6) द्वीप समूह

भारत में दो प्रमुख द्वीप समूह हैं– एक बंगाल की खाड़ी में और दूसरा अरब सागर में।

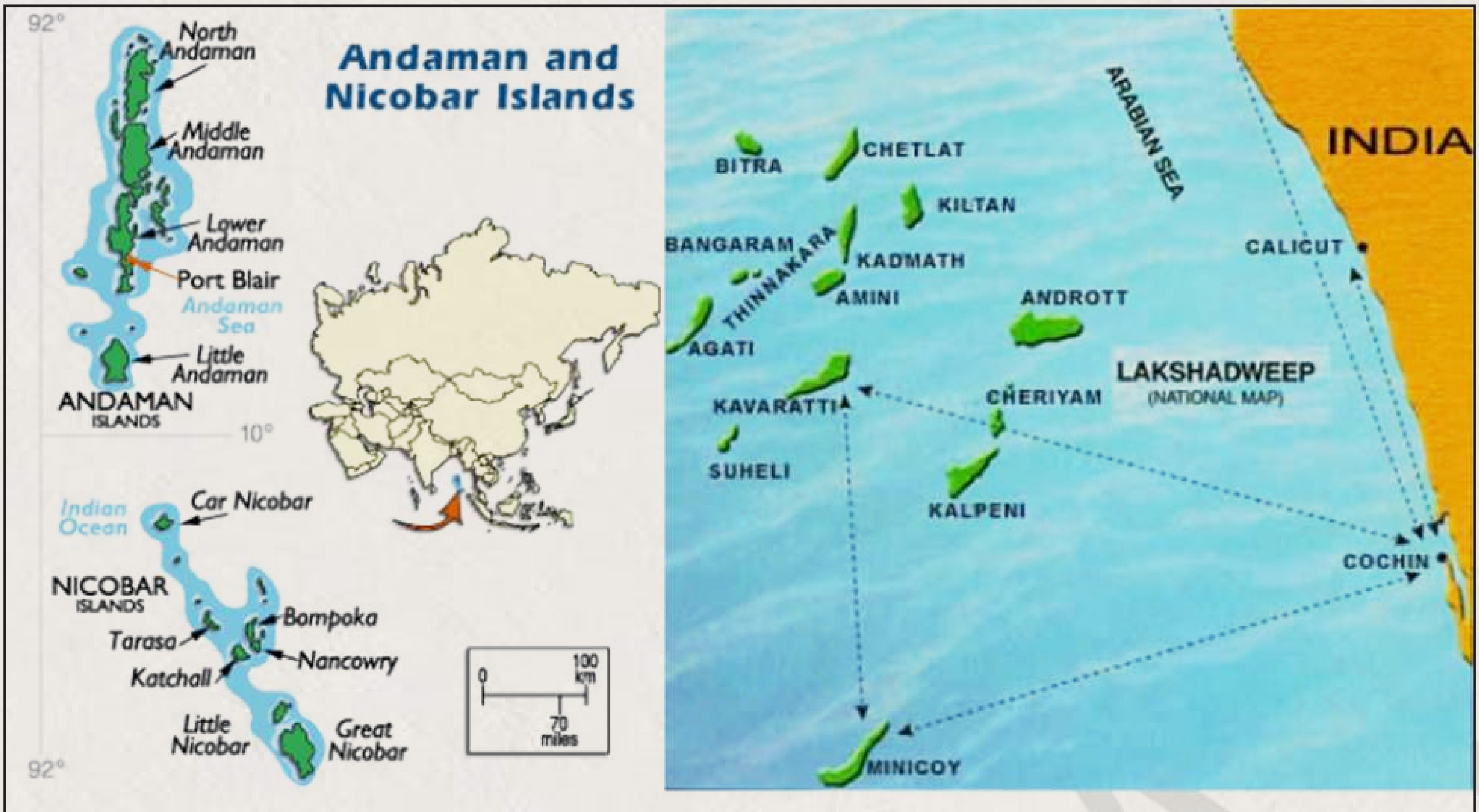

(a) – Andaman and Nicobar Islands (b) Lakshadweep Islands

भारत के द्वीप समूह

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह	लक्षद्वीप द्वीप समूह
ये द्वीप समूह समुद्र में **जलमग्न पर्वतों का विस्तार** हैं। हालाँकि, कुछ छोटे द्वीपों की **उत्पत्ति ज्वालामुखी से भी जुड़ी है।** बैरन आइलैंड नामक भारत का एकमात्र जीवंत ज्वालामुखी भी निकोबार द्वीपसमूह में स्थित है।	द्वीपों का यह समूह छोटे **प्रवाल द्वीपों** से बना है।
द्वीपों के पूरे समूह को दो व्यापक श्रेणियों में बांटा गया है– उत्तर में अंडमान और दक्षिण में निकोबार। ये एक जल निकाय द्वारा पृथक किये गए हैं, जिसे **'टेन–डिग्री चैनल'** कहा जाता है।	द्वीपों के पूरे समूह को **'11 डिग्री चैनल'** द्वारा दो भागों में विभाजित किया गया है, इसके उत्तर में अमीनी द्वीप और दक्षिण में कनानोर द्वीप है।
ये द्वीप भू–मध्य रेखा के करीब स्थित हैं और इस प्रकार, **भू–मध्यरेखीय जलवायु** का अनुभव करते हैं। भारी संवहनीय वर्षा के कारण **द्वीपों में घने जंगल हैं।**	यहाँ का सबसे बड़ा द्वीप, मिनीकॉय द्वीप है, जिसका क्षेत्रफल 4.5 वर्ग किलोमीटर है।